Indian J.Soc & Pol. 03(03):2016:91-94 **ISSN 2348-0084 (PRINT)**
(Special Print Issue: September, 2016) **ISSN 2455-2127(ONLINE)**

केन्द्रीकरण बनाम विकेन्द्रीकरण : गांधी एक अध्ययन

अर्जुन मिश्र[1]
[1]एसोसिएट प्रोफेसर रा0शा0वि0 विभाग, शिवपति पी0जी0 कालेज, शोहरतगंढ, सिद्धार्थनगर उ0प्र0

ABSTRACT

गांधी के अनुसार अर्थ–शास्त्र का वह नियम जो नैतिक सिद्धांतो की उपेक्षा या अवज्ञा करता हो गलत है। प्रत्येक मनुष्य को जीवित रहने का अधिकार है, उसे अपने लिये भोजन, कपड़ा और मकान की व्यवस्था के लिये साधन जुटाने का अधिकार है। हिन्दुस्तान के लिये सच्ची योजना वही है जिससे समूचे मनुष्य शक्ति का अच्छे से अच्छा उपयोग हो सके अर्थात हिन्दुस्तान के लिये ऐसी आर्थिक योजना चाहिए जिससे करोड़ों लोगों को आजीविका मिल सके। उसी आधार पर गांधी ने हिन्दुस्तान के लिये लघु उद्योग, कुटीर उद्योग, स्वदेशी को उपयोगी बताया। शहरों तथा विदेशों के शोषण से जर्जर हो चुके गांवों को आत्म निर्भर बनाने के लिये ग्राम–स्वराज्य का विचार दिया। नेहरू और गांधी के बीच भारत के निर्माण के लिये आर्थिक–नीति अपनाने पर मतभेद जग जाहिर हैं। जहां गांधी गांवों के विकास के आधार पर भारत का विकास करना चाहते थे वहीं नेहरू पश्चिमी ज्ञान और सभ्यता के आधार पर भारत का विकास करना चाहते थे, लेकिन नेहरू ने भी लिखा है कि गांधी को ''भारतीय गांवों और वहां की जीवन स्थिति का अद्वितीय ज्ञान था। इस व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर उन्होंने चरखा और ग्राम–उद्योग की योजना बनाई थी। अगर देश के अनगिनत बेकारों और अर्द्धबेकारों को फौरन राहत पहुंचानी थी, अगर उस सड़न को, जो सारे देश में फैलती जा रही थी और जन–साधारण को पंगु बनाती जा रही थी, दूर करना था, अगर गांव वालों के जीवन–मान को सामूहिक रूप से थोड़ा–बहुत भी ऊपर उठाना था, अगर उन्हें परित्यक्तों की भांति दूसरों से राहत पाने की असहाय प्रतीक्षा में न रहकर आत्म–निर्भरता का पाठ पढ़ाना था और अगर यह सब काम बिना पूंजी के होना था तो कोई दूसरा रास्ता नहीं दिखाई देता था।'' प्रस्तुत शोध पत्र भावी भारत के निर्माण में इन्हीं दो परस्पर विरोधी विचारधाराओं पर प्रकाश डालने का प्रयास है जिसके एक छोर के साथ गांधी बड़ी मजबूती से खड़े दिखायी देते हैं।

***KEY WORDS:** केन्द्रीकरण, विकेन्द्रीकरण, गांधी, ग्राम स्वराज,*

युग द्रष्टा गांधी के सभी सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक विचारों के केंद्र में मनुष्य है। वे कहते थे कि हम जो भी करें उसके मूल में मानव का कल्याण होना चाहिए। वे दरिद्र नारायण की सेवा को नारायण (भगवान) की सेवा मानते थे। मानव की सहायता के लिये सरल यंत्रो का निर्माण हुआ, परन्तु औद्योगिक क्रांति के बाद यंत्रो का स्वरूप बदल गया (पहले एक यंत्र से कई काम होते थे, लेकिन अब विशिष्ट यंत्रो का निर्माण होने लगा)। यंत्र बहुत महंगे हो गये । इन यंत्रो पर पैसा खर्च करने वाले स्वाभाविक रूप से अपने पैसे को निकालने के लिये प्रचुर उत्पादन किया। उत्पादन को खपाने के लिये लोगों की उपभोग प्रवृति को बढ़ावा दिया गया। इतने अधिक उत्पादन को अपने देश में तो खपाया नहीं जा सकता था, उसके लिये नये स्थान की खोज की जाने लगी। अन्य देश भी जो अधिक उत्पादन कर रहे थे उनके लिये भी यही समस्या थी। अपने माल को खपाने के लिय देशों में आपस में प्रतिस्पर्धा होने लगी और साम्राज्यवाद का जन्म हुआ। प्रतिस्पर्धा में वही टिका जो शक्तिशाली था। जैसे बड़ी मछली छोटी को खा जाती है उसी तरह से शक्तिशाली देश अपने से कमजोर देश को खाने लगे। युद्ध, हिंसा, स्वार्थ और अविश्वास चारो ओर दिखाई पड़ने लगा।

साम्राज्यावादी देश अपने–अपने देश के लिये बहुत सस्ते दाम पर उपनिवेशों से सामान लाते थे तथा वहां पर तैयार माल महंगे दाम पर बेचते थे। मशीनों द्वारा निर्मित माल के कारण उपनिवेशों के स्थानीय सामानों की मांग कम होने लगी तथा धीरे–धीरे वहां के व्यवसाय चौपट हो गये। इस प्रकार साम्राज्यवादी देशों द्वारा उपनिवेशों का दोहरा शोषण हुआ।

भारत में अंग्रेजों के आने के पूर्व, औद्योगिक क्रांति से भी पहले एक औद्योगिक केंद्र के रूप में जाना जाता था। यहां के सूती व मलमल के कपड़ों, धातु के बर्तनों की विदेशों में बहुत मांग थी, लेकिन ब्रिटिश शासकों के आने से धीरे–धीरे

1.Corresponding Author

इनका ह्रास हुआ और बाद में लगभग नष्ट हो गये ।इन वस्तुओं के उत्पादन में लगे लोग बेकार हो गये। जब गांव के लोग रोजगार छीन जाने से बेकार हो गये तो वे शहरों की ओर भागे जहां उन्हें कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ा तथा शहरों में भी नई–नई समस्यायें खड़ी हुई। गांधी ने हिन्द स्वराज्य में लिखा है कि ''बम्बई की मिलों में जो मजदूर काम करते हैं वे गुलाम बन गये हैं। जो औरतें काम करती है उनकी हालत देखकर कोई भी कॉप उठेगा। जब मिलों की वर्षा नहीं हुई थी तब वे भूखों नहीं मरती थी। अगर हिन्दुस्तान में हम मेनचेस्टर कायम करेंगे तो पैसा हिन्दुस्तान में रहेगा, लेकिन वह पैसा हमारा खून चूसेगा।''(गांधी,2009पृ094) औद्योगीकरण के परिणाम स्वरूप धन का संचय कुछ ही हाथो में होता है। कुछ लोग ही पूरी अर्थव्यवस्था का नियंत्रण और संचालन करते हैं। समाज में घोर आर्थिक असमानता उत्पन्न हो जाती है। विषमता के कारण वर्ग संघर्ष बढ़ता है, हड़ताल, तालाबंदी की समस्या पैदा होती है। कारखानों में उत्पादन के कारण बड़ी संख्या में लोग बेकार हो जाते हैं। खाली दिमाग शैतान का घर होता है, वे बेकार लोग समाज में अव्यवस्था पैदा करते हैं। बेकारी के कारण एक तरह लोग मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाते दूसरी तरफ अनावश्यक तथा बिलासिता की चींजो का उत्पादन किया जाता है। मशीनों पर काम करते–करते मनुष्य नीरस हो जाता है, उसकी रचनात्मक प्रवृति समाप्त होने लगती है। गांधी का मानना था कि औद्योगीकरण के परिणास्वरूप मानवीय और नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, इसलिए गांधी ने औद्योगीकरण, मशीनीकरण का विरोध किया। जो लोग गांधी पर यह आरोप लगाते है कि यंत्रों का विरोध कर वे देश को पीछे ले जा रहे थे वे शायद यह नहीं समझते हैं कि गांधी कुछ का नहीं सबका भला चाहते थे। वे बड़े पैमाने पर बेकारी को ध्यान में रखकर ही मशीनों के खिलाफ अपना विचार दिये थे। गांधी ने तो कहा था कि मैं ऐसी मशीन का स्वागत करूगा जिससे व्यक्तियों का परिश्रम बचता हो और लाखों झोपड़ियों का भार हल्का हो।(यंग इण्डिया,17जून1926) उन्होंने यहां तक कहा कि मैं अधिक से अधिक विकसित यंत्रो का भी समर्थन करूंगा यदि उससे भारत की दरिद्रता और उससे पैदा होन वाली आलस्य समाप्त हो सके।(वही,13नवंबर1921) इस प्रकार गांधी दरिद्रता के नाश का इलाज उद्योगवाद को नहीं मानते थे।

गांधी के अनुसार अर्थ–शास्त्र का वह नियम जो नैतिक सिद्धांतो की उपेक्षा या अवज्ञा करता हो गलत है।(नवजीवन,26 दिस्ंबर,1924) प्रत्येक मनुष्य को जीवित रहने का अधिकार है, उसे अपने लिये भोजन, कपड़ा और मकान की व्यवस्था के लिये साधन जुटाने का अधिकार है। हिन्दुस्तान के लिये सच्ची योजना वही है जिससे समूचे मनुष्य शक्ति का अच्छे से अच्छा उपयोग हो सके।(हरिजन सेवक,23मार्च1947)अर्थात हिन्दुस्तान के लिये ऐसी आर्थिक योजना चाहिए जिससे करोड़ों लोगों को आजीविका मिल सके। उसी आधार पर गांधी ने हिन्दुस्तान के लिये लघु उद्योग, कुटीर उद्योग, स्वदेशी को उपयोगी बताया। शहरों तथा विदेशों के शोषण से जर्जर हो चुके गांवों को आत्म निर्भर बनाने के लिये ग्राम–स्वराज्य का विचार दिया। 10 अप्रैल 1932 को लिखे एक पत्र में उन्होंने कहा कि विद्यार्थी यदि किसी उद्योग को अपनाना चाहते हैं तो बढ़ईगिरि और जिल्दसाजी का काम उत्तम है। इसके अतिरिक्त चरखे से संबंधित इतने अधिक उद्योग है कि अन्य कोई कार्य हाथ में लेने का प्रश्न ही नही उठता। सेवाग्राम में खजूर, गुड़ और शीरा, कुम्हारगिरी, चर्मशोधन का कार्य, मुधमक्खी पालन इत्यादि को बढ़ावा दिया। गांधी एक तरफ गांव में फैली बरोजगारी को दूर करने का प्रयास कर रहे थे दूसरी तरफ मशीनीकरण पर नियंत्रण का प्रयास कर रहे थे। हथकरघा उद्योग को स्वदेशी आंदोलन से बल मिला। कृपलानी के प्रोत्साहन से बनारस में 30 नवम्बर 1920 को गांधी आश्रम की स्थापना हुई। 1925 में अखिल भारतीय चरखा संघ की स्थापना हुई। नेहरू और गांधी के बीच भारत के निर्माण के लिये आर्थिक–नीति अपनाने पर मतभेद जग जाहिर हैं। जहां गांधी गांवों के विकास के आधार पर भारत का विकास करना चाहते थे वहीं नेहरू पश्चिमी ज्ञान और सभ्यता के आधार पर भारत का विकास करना चाहते थे, लेकिन नेहरू ने भी लिखा है कि गांधी को ''भारतीय गांवों और वहां की जीवन स्थिति का अद्वितीय ज्ञान था। इस व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर उन्होंने चरखा और ग्राम–उद्योग की योजना बनाई थी। अगर देश के अनगिनत बेकारों और अर्द्धबेकारों को फौरन राहत पहुंचानी थी, अगर उस सड़न को, जो सारे देश में फैलती जा रही थी और जन–साधारण को पंगु बनाती जा रही थी, दूर करना था, अगर गांव वालों के जीवन–मान को सामूहिक रूप से थोड़ा–बहुत भी ऊपर उठाना था, अगर उन्हें परित्यक्तों की भांति दूसरों से राहत पाने की असहाय प्रतीक्षा में न रहकर आत्म–निर्भरता का पाठ पढ़ाना था और अगर यह सब काम बिना पूंजी के होना था तो कोई दूसरा रास्ता नहीं दिखाई देता था।''

गांधी द्वारा विकेन्द्रीकरण नीति अपनाने के पीछे निम्नलिखित कारण थे–

1. श्रम का उपयोग और रोजगार का सृजन : भारत एक कृषि प्रधान देश है। कृषि यहां की अधिकांश जनसंख्या का पेशा है। जनसंख्या बढ़ने से कृषि योग्य भूति पर दबाव भी बढ़ा। कृषि में लगे लोग जुताई, बोआई और कटाई के बीच लगभग 6 से 8 महीने खाली बैठते हैं। बरोजगारोंकी संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इन बेराजगारों और मौसमी बेराजगारों की समस्या

का निदान लघु उद्योग तथा कुटीर उद्योग द्वारा हो सकता था, क्योंकि उन्हें घर पर ही रोजगार देकर उनका विकास किया जा सकता था। गांधी ने कहा '' हम अपने 30 करोड़ बेकारों के लिये काम जुटा सकते हैं, परन्तु इग्लैण्ड अपने 30 लाख के लिये कोई काम मुहैया नहीं करा सकता। उद्योगवाद का भविष्य अंधकारमय है।''(यंग इण्डिया,12नवंबर1931)

2. पूंजी की कमी : तत्कालीन समय में भारत अविकसित देशा था। देश में पूंजी की कमी थी। पूंजी के सृजन के दो ही रास्ते थे देश के अंदर से और देश के बाहर से, देश के बाहर से जो पूंजी आती वह बड़े उद्योगों के लिये ही आती। कम पूंजी में उद्योग चलाने के लिये छोटे उद्योग (लघु, कुटीर) का ही रास्ता था। छोटे पूंजी से चलने वाले उद्योग देश के लिये हितकर भी थे। जैसे– 2 करोड़ की पूंजी से किसी बड़े कारखाने में दो हजार लोगों को काम मिल सकता था, लेकिन उसी दो करोड़ की पूंजी से लघु उद्योगों में पांच लाख लोगों को काम मिल सकता था। बाहर से पूंजी प्राप्त करने में कई तरह के समझौते भी करने पड़ते हैं। लघु उद्योगो, कुटीर उद्योग की स्थापना से इस समस्या से बचा जा सकता है।

3. निम्न जीवन स्तर : देश में अधिकांश लोगों को दो जून की रोटी भी नहीं मिलती थी। गांवों में रोजगार देकर इन लोगों के जीवन स्तर को उठाया जा सकता था।सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इन उद्योंगों में काम करने के लिए लोगों को किसी विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता न थी।

4. विभिन्न पेशा में लगे लोगों का उत्थान : प्राचीन भारत समाज में लोग अपने पुस्तैनी व्यवसाय में लगे रहते थे। गांधी ने इसे उपयक्त माना क्योंकि ब्राम्हण का लड़का अपने घर से ही पुरोहिती का कार्य सीखता है इसी प्रकार लोहार का लड़का अपने घर में, बढ़ई का लड़का अपने घर में, धोबी का लड़का अपने घर में। लगभग सभी को रोजगार मिला था। जबतक सभी का विकास नही होगा देश का विकास नहीं हो सकता। जब ग्रामोद्योग से समुद्धि आयेगी तो दूसरे पेशे जैसे, कला, मनोरंजन और संस्कृति का भी विकास होगा।

5. मानवीय मूल्यों की रक्षा : औद्योगिक सभ्यता में एक देश दूसरे देश का, शहर गांव का उद्यमी मजदूरों का शोषण करते हैं। मनुष्य के अंदर काम करते करते नीरसता आ जाती है। उसके कला पक्ष और रचनात्मक प्रवृत्ति का लोप हो जाता है। लद्यु उद्योग और कुटीर उद्योग की स्थापना से इस समस्या से छुटकारा मिल सकता है। इस पद्धति से उत्पादन उपभोग के लिये होता है लाभ और शोषण के लिये नहीं। इससे औद्योगिकरण, आधुनिक सभ्यता के तमाम दोषों से बचा जा सकता है। गांव के सभी लोग मिल जुलकर, प्रेमपूर्वक एक दूसरे का सहयोग करते हैं। गांधी ने अपने परिकल्पना के गांव के बारे कहां ''जहां तक संभव होगा, गांव के सारे काम सहयोग के आधार पर किये जायेगें।''(हरिजनसेवक,2अगस्त1942)

6. वर्ग संघर्ष को टालना : बड़े उद्योगों (कारखानों) में मालिक तथा मजदूर में संघर्ष की प्रवृत्ति बनी रहती है। मालिक द्वारा मजदूर का शोषण होता है। मजदूर अपनी आवश्यकता के लिये तालाबंदी और हड़ताल करते हैं। गांधी किसी प्रकार के हिंसा को स्वीकार नहीं करते हैं, इसलिए उन्होंने वर्ग संघर्ष की जगह ट्रस्टीशिप का सिद्धांत दिया। लघु उद्योग तथा कुटीर उद्योग की स्थापना से न तो पूंजी के केंद्रीय करण (संचयन) की समस्या होगी न वितरण की समस्या होगी। उपर्युक्त महौल में काम करने से मजदूरों का स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

7. प्राचीन गौरव को लौटाना : जैसा कि पूर्व में कहा गया है कि प्राचीनकाल में भारत एक औद्योगिक केंद्र के रूप में विख्यात थे। यहां की कारीगरी की बाहर बहुत प्रशंसा होती थी। लघु उद्योग, कुटीर उद्योग द्वारा पुनः यह संभव है।

गांधी के सपनों के स्वराज्य में स्वालंबन का महत्वपूर्ण स्थान था। वे गांव को स्वावलंबी, आत्मनिर्भर बनाकर वहां की गरीबी, भूखमरी, लाचारी, बरोजगारी, को दूर करना चाहते थे। गांधी के विकेन्द्रीकरण का सुरक्षा और युद्ध की दृष्टि से बहुत लाभ है। गांधी का कहना था महलों की सुरक्षा के लिये सुरक्षा गार्डो की जरूरत होती है झोपडियों (जिनके पास से ले जाने के लिये कुछ नहीं है) को नहीं। कारखाने जो हिंसा की जगह है, शोषण की जगह हैं उनकी सुरक्षा की जरूरत पड़ेगी, परन्तु प्रेम सहयोग, अहिंसा पर आधारित लघु उद्योग, कुटीर उद्योग, ग्राम उद्योग को नहीं। युद्ध के समय केंद्रीकृत उद्योगों को नष्ट किया जा सकता है, लेकिन घर–घर स्थित उद्योगों को नहीं।

कुमारप्पा ने केंद्रीयकरण की परिस्थितियों की चर्चा करते हुए कहा, जहां पर पूंजी कुछ लोगों के पास जमा हो, काम के अनुरूप काम करने वालों की संख्या कम हो, जहां, फौजी अनुशासन के द्वारा कोई काम योजना के अनुसार जल्दी करना हो (जैसे रूस), जहां कच्चा माल, उत्पादक और बिक्री स्थल दूर–दूर हो (जैसे, जर्मनी, जापान, इंग्लैण्ड) वहां के लिय उपयोगी है। विकेन्द्रीकरण की परिस्थितियों की चर्चा करते हुए कहा, जहां पूंजी की कमी हो, श्रम बहुतायत हो, काम में भिन्नता और नवीनता हो, जहां जनतंत्र की स्थापना भी हो, जहां कच्चा माल और बाजार उत्पादन केंद्र से मिल हो वहां के लिये विकेन्द्रीरण उपयोगी है। अपने विश्लेषण द्वारा वह भारत के लिये विकेंद्रीकरण उपयोगी मानते हैं।(कुमारप्पा,1960 पृ0 178–182) गांधी द्वारा उद्योगों के विकेंद्रीकरण का समर्थन और औद्योगिकरण के विरोध का यह अर्थ नहीं है कि वे भारी तथा

बड़े उद्योगों को नष्ट करना चाहते थे। जो आवश्यक बड़े उद्योग है उस पर राज्य का नियंत्रण आवश्यक मानते थे जिससे वे मुनाफे के लिये नहीं मानव जाति के फायदे के लिये उत्पादन करें।(यंग इण्डिया,13नवंबर1924) गांधी किसी भी प्रकार के विशेषाधिकार व एकाधिकार के खिलाफ थे।(विनोबा,1969पृ037)

गांधी का विकेंद्रीकरण आर्थिक ही नहीं राजनीतिक भी था। पंचायतों के माध्यम से वे असली लोकतंत्र की स्थापना करना चाहते थे। गांधी और साम्यवादियें में अंतर कतरे हुए विनोवा ने कहा, ''विकेन्द्रीकरण केवल उद्योग तक ही सीमित नहीं रहता। विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया राजसता के लिये भी लागू होती है। अहिंसक समान–रचना की घोषणा करने वाले विचारकों को भी कभी–कभी इस बात का ध्यान नहीं रहता। वे औद्योगिक विकेन्द्रीकरण का समर्थन कर उसी के रक्षण के लिये मजबूत केंद्रीय सता की (अक्सर बीच के समय के लिए) कभी–कभी मांग करते हैं। साम्यवादियों की कल्पना में भी राज्यसता आखिर कड़ी गर्मी में रखे हुए धी की तरह ही नहीं, बल्कि ट्राटस्की के सिर में मारे हुए लोहे के हथौड़े जैसी ठोस और मजबूत चाहिए।''(वही पृ038)

स्पष्ट है कि गांधी की विकेन्द्रीकरण की नीति से गांव के लोगों के फालतू (अतिरिक्त) समय का उपयोग हो सकेगा गांव स्वावलंबी बनकर अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त कर सकते हैं। औद्योगिकरण की तमाम स्वाभाविक बुराईयों से बचा जा सकेगा। देश में उत्पन्न बेरोजगारी, गरीबी, असमानता, बढ़ती शहरीकरण की प्रवृति, प्रदूषण का कारण गांधी की नीतियों की अवहेलना है। देश की प्रकृति के अनुकूल गांधी की नीतियों को आजादी मिलने के पहले ही कांग्रेस द्वारा अस्वीकार कर दिया गया। जिस कांग्रेस ने मद्रास अधिवेशन में हिंद स्वराज्य का कार्यक्रम का हिस्सा बनाया उसी कांग्रेस ने (नेहरू द्वारा 1945 में) गांधी की नीति को पिछड़ापन वाला माना था। जबतक नेहरू को अपनी गलती का एहसास हुआ तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

टिप्पणी :

1. विनोवा विकेन्द्रीकरण और विकेन्द्रित उद्योगों में अंतर करते हैं। उन्होंने लिखा है ''विकेन्द्रीकरण की बात बिल्कुल ही अलग है। वह शब्द नया होने के कारण उसके साथ भले–बुरे कुछ भाव अथवा संस्कार लगे नहीं है। जिस प्रकार यह शब्द नया है, उसी प्रकार उसका अर्थ यानी उसके पीछे की कल्पना भी नयी है। कोई पूछेगें कि यंत्रयुग के आने के पहले जब सारा विकेन्द्रीकरण ही था, तो फिर उसमें नया क्या है? लेकिन यंत्र युग से पहले विकेन्द्रीकरण नही था, बल्कि सब विकेंद्रित था। गांवों मं सारे उद्योग विकेंद्रित रूप से चलते रहे, तो उतने से विकेंद्रीकरण हो गया, ऐसा नहीं कहा जा सकता। केंद्रीकरण में विकेंद्रित उद्योगों के साथ–साथ समग्र दृष्टि की एक व्यापक योजना गृहीत है। वैसी योजना के अभाव में विकेंद्रित उद्योगों का अर्थ 'बिखरे हुए उद्योगों होगा। ऐसे विखरे हुए उद्योग यंत्र–युग के पहले थे। स्वाभावितक रूप में यंत्र–युग की पहली चोट लगते ही वे छिन्न–भिन्न होने लगे। इसके विपरीत विपरीत विकेंद्रीकरण की व्यवस्था छिन्न–भिन्न होने वाली नहीं, बल्कि यंत्र–युग को छिन्न–भिन्न करने वाली है। आज का यंत्र–युग नाम से तो यंत्र–युग है, किन्तु वस्तुतः वह अत्यन्त अ–यंत्रित है। उसके बदले, साम्यवादी 'सुयंत्रित यंत्र–युग' चाहते हैं। किन्तु शास्त्रों की तरह यंत्र भी मनुष्य के खोजे हुए ही क्यों न हो, किंतु अपने–आप में अमानवीय ही है। इसलिए उनका मानवीयकरण एक हद से आगे नहीं हो सकता। उल्टे वे मानव को अपना खिलौना बना लेते हैं।

संदर्भ

यंग इंडिया, 17–6–26, उद्घृत, गांधी जी (2009) :*सर्वोदय,* अहमदाबाद, नवजीवन प्रकाशन मंदिर,

कुमारप्पा,जो0का0(1960) *गांव–आंदोलन क्यों?* काशी, अखिल भारत सर्व–सेवा–संघ–प्रकाशन,

विनोबा,(1969) *तीसरी शक्ति,* वाराणसी, सर्व सेवा संघ प्रकाशन,

हरिजनसेवक 23–3–47, उद्घृत, वहीं

नवजीवन, 26'–12–24, उद्घृत, महात्मा गांधी,(2007) *ग्राम स्वराज्य,* नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद,

नेहरू, जवाहर लाल (2013) : *राष्ट्रपिता,* सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन

गांधी जी,(2009) : *हिन्द स्वराज्य,* वाराणसी, सर्व सेवा संघ प्रकाशन,